दिनांक 14.07.1974 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

दृढ़ संकल्प रखकर बनो सफलता का सितारा

सफलता पाना है जन्म सिद्ध अधिकार हमारा

ईश्वरीय सन्तान होने का नशा खुद पर चढ़ाओ

निश्चय बुद्धि से भरपूर अपना हर बोल बनाओ

देह-अभिमान के नशे से खुद को मुक्त बनाओ

अपने हर बोल को सर्वशक्ति से सम्पन्न बनाओ

अपने श्रेष्ठ कर्मों से औरों को मार्ग दिखलाओ

हर कर्म दूसरों के लिए शिक्षा स्वरूप बनाओ

हर बात में सन्तुष्टता का अनुभव करते जाओ

हर्षितपने को अपना नेचुरल संस्कार बनाओ

अपने हर्षितपने से औरों की उलझन मिटाओ

उदास हतास आत्माओं में हर्षितपन जगाओ

बाप के संग का रंग जब औरों पर बिखराओगे

सफलतामूर्त सफलता का सितारा कहलाओगे

सबके प्रति शुद्ध भावना शुभ कामना जगाओ

सहज रूप से सफलता का सितारा बन जाओ